परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्षशिला

हमार अंगना

अंक 6 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | जनवरी 2019

परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार आंगना के अंक 6 में आपका स्वागत है। आईये संक्षिप्त जानकारी लेते है बालघर आंगन गतिविधियों के बारे में....।

बालघर आँगन :-

बालघर आंगन परिवर्तन परिसर में शिक्षा की एक छोटी इकाई है, जो लगातार 5 वर्षो से बच्चों एवं सेविकाओ की सेवा में जुटी है। बालघर आँगन में आँगनबाड़ी केंद्र से 3 वर्ष से 6 वर्ष के बच्चे आते है। एवं बालघर आँगन के माध्यम से साल में कई बार सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

संकल्पना एवं उद्देश्य :- बचपन जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, इस उम्र में बच्चा केवल खाना एवं खेलना जानते है। परन्तु बालघर का उद्देश्य है कि बच्चो को खेल-खेल एवं कविता, कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान कराया जा सके।

इसका नया स्वरुप :- बच्चों के सम्पूर्ण विकास के उद्देश्य से 2014 में बालघर आँगन की स्थापना की गयी। प्रारंभ में दो पंचायतों के चार आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ काम शुरू किया गया। आज बालघर आँगन 7 पंचायतों के 46 आँगनबाड़ी केन्द्रों पर कार्यरत है, जिसमें क्रमबद्ध 16-16 आंगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चो के साथ क्लास एवं अन्य केन्द्रों के साथ विजिट किया जाता है। प्रत्येक दिन चार-चार आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ परिवर्तन में दो पारियों/शिफ्ट में क्लास चलायी जाती है साथ ही साथ योजनाबद्ध तरीके से सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला करायी जाती है।

कृषि के प्रति बच्चों में उत्साह -

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की 60 प्रतिशत जनसँख्या कृषि से जुड़ी हुयी है। भारत के लोगो के लिये कृषि मुख्य आय का स्त्रोत है। हमारे जीवन के लिये भोजन आवश्यक है और हम अपनी खाद्य आवश्यकता के लिये कृषि उत्पादन पर निर्भर हैं। बच्चे भारत का भविष्य हैं। इन्हीं बच्चों में से आगे चलकर कोई डाक्टर बनेगा, कोई इंजीनियर, कोई कृषि बैज्ञानिक तो कोई किसान बनकर भारत माता की सेवा करेगा। इसलिए बच्चों को अन्य गतिविधियों के आलावा इस वर्ष कृषि हरियाली ज्ञान केंद्र से जोड़कर बच्चों को खेती करने का अवसर दिया गया तथा यह बताया गया है कि हमारे घरों में खाने में उपयोग होने वाला कौन- कौन से अनाज हैं और हम अपनी धरती पर क्या-क्या उपजा सकते हैं। गर्मी के मौसम में भिन्डी की खेती की गयी, उसमें बच्चों से बीज की पहचान करायी गयी तथा अंकुरित बीज के बारे बताया गया। भिन्डी का पौधा लग जाने पर उसमें सिंचाई करने को बताया गया। अगला सीजन अर्थात् जाड़े के मौसम में गेहूं की खेती, आलू की खेती, गोभी की खेती कैसे की जाती है बच्चों को बताया गया। छोटी –छोटी क्यारी बनाकर आलू, प्याज, गोभी, मटर, टमाटर,पालक की खेती की गयी। बच्चों को यह सब खुद से करने का भरपूर मौका दिया गया। बच्चे दैनिक गतिविधि करते हुए अपनी खेती का भी ध्यान रखते हैं। समय पर सिंचाई करते हैं, घास पतवार हो जाने पर खर पतवार निकालते हैं एवं समय-समय पर सिंचाई करते है। बच्चों को यहाँ पर होने वाली सभी प्रकार की सब्जियों के बारे में बताया जाता है।

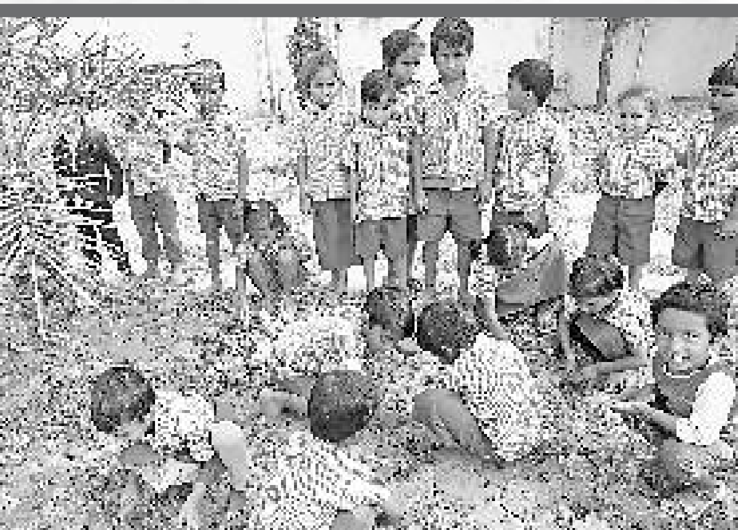

बच्चों की पसंद-

बालघर के लिये बच्चों का नामांकन 8 माह के लिये किया जाता है जिसमें 16 आँगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चो को परिवर्तन बालघर लाकर क्लास कराया जाता है तथा 30 आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर भी क्लास कराया जाता है। दोनों जगहों पर एक ही गतिविधि करायी जाती है। जिसमें प्रतिदिन दिनचर्या के साथ समय के अनुसार सेशन होता है। उसमें बच्चे एक्शन के साथ कविताएँ, कहानियां एवं संगीत सुनना बहुत पसंद करते हैं। साथ ही साथ झूला-झूलना तथा बाहर के वातावरण में खेल बहुत पसंद हैं। जब ये बच्चे अपनी पसंद को पूरा करके अपने गाँव जाते हैं तो वो गाँव के अन्य बच्चों से अलग ही नजर आते है। ये बच्चे जब बड़े भी हो जाते हैं तो इनके हर काम को करने का तरीका, दूसरों से बात करने का तरीका भी अन्य बच्चों से अलग हो जाता है।

रंगों की किलकारी

कला समाज का एक आईना हो सकता है, जैसा समाज होता है कला उसी समाज को आईने की तरह अपनी कृतियों में दिखाने की कोशिश करती है। ठीक उसी तरह बच्चे को समाज-निर्माता अर्थात कल का भविष्य कहा जाता है। इस तरह कला का बच्चों के साथ बहुत बड़ा सम्बन्ध है, क्योंकि जिस बच्चे में कला की समझ होगी वह कभी गलत गतिविधियों में नहीं उलझेगा। उनकी सोच हमेशा कलात्मक होगी। कला को सृजन कहा गया है और कल के भविष्य कहे जाने वाले बच्चों को भी हमेशा सृजनात्मक होना चाहिए । इन्हीं सब सोच के साथ परिवर्तन द्वारा “बालघर आँगन” के बच्चों को “घरौंदा” से जोड़ा गया है। ताकि वह अपनी जिन्दगी को सृजनात्मक और रोचक बना सकें। ये बच्चे आस- पास के आंगनबाड़ी केंद्र के होते हैं जिनकी उम्र 5 साल से कम होती है।

जब छोटे-छोटे बच्चों को रिंकू मैडम एक कतार में सजा कर घरौंदा क्लास के लिये लाती हैं तो ऐसा लगता है जैसे छोटे -छोटे तारों की बारात आ रही हो। इतने छोटे बच्चों में इतना अनुशासन देखकर बहुत अच्छा लगता है। लगभग 20 की संख्या होने के वावजूद भी, ना तो इनकी कतार टूटती है और ना ही कोई शोरगुल करता है। सारे बच्चे अनुशासन का परिचय देते हुए अपना जूता चप्पल भी कतार में लगाकर घरौंदा में आते हैं और गोल बनाकर खड़े हो जाते हैं। फिर इनमें से ही कोई प्रार्थना कराता है और सारे बच्चे प्रार्थना शुरू करते हैं।

रंगों की समझ तो इन्हें नहीं होती और ना ही इन्हें रेखाओं की जानकारी होती है। पर एक चीज इनके पास बहुत मात्रा में होती है और वह है इनका आत्मविश्वास । बड़ा ही अजीब तब लगता है जब ये बच्चे जो ठीक से चल भी नहीं पाते, और इन्हें कुछ बनाने को कहा जाए तो यह हवाई जहाज बनाते हैं और कहते हैं कि मैं हवाई जहाज उड़ाउंगा। इनकी सृजन क्षमता और कल्पनाशीलता का तो कोई जबाब नहीं। एकबार इन्हें पेपर और रंग दिया गया ताकि ये रंग के साथ खेल सकें, उस समय इनकी कल्पनाशीलता को देख कर मैं भी दंग रह गया। बच्चे पेपर पर जो मन में आता वही रंग लगाते गए ,आकृति समझ में नहीं आ रही थी पर जब बच्चों से पूछा गया तो उन बच्चों को उस बेनाम आकृति में भी

कोई तितली तो कोई फूल और परिवर्तन परिसर नजर आने लगा। वास्तव में इनकी कल्पनाशीलता गजब की होती है।

टेराकोटा कार्यशाला में भी इन बच्चों ने भाग लिया जिसमें इनका योगदान किसी भी बड़े बच्चे से कम नहीं रहा। पांच साल से कम उम्र होने के बावजूद, कोई बच्चा मिट्टी से खूबसूरत मछली बनाता तो कोई हँसता हुआ चेहरा। सबसे बड़ी बात सारे बच्चे खुश थे और इस कारण उनके चेहरे पर आनंद का भाव था। वे मिट्टी से कुछ-कुछ बनाकर सीधा दौड़ कर मेरे पास आते और बहुत उत्सुकता से मुझे दिखाते।

बच्चे वास्तव में बहुत कोमल और निश्छल होते हैं। उन्हें जितना प्यार दिया जाय उनका जीवन उतना ही प्रकाशमय होता है। हर बच्चे के अन्दर कला छुपी होती है क्योंकि हर आदमी अपने बचपन में कलाकार होता है पर जीवन की भाग दौड़ के कारण वह कलाकार से एक सामान्य आदमी बनकर रह जाता है। कुछ अपनी परिस्थिति के कारण तो कुछ अपने परिवार के माहौल के कारण, क्योंकि परिवारवालों को कला, सिर्फ समय की बर्बादी लगती है और कुछ नहीं।

परिवर्तन समाज की इन्हीं दकियानूसी विचारों को बदलने का कार्य करता है ताकि हर बच्चे के अन्दर कला का उदभव हो। हमारी कोशिश यही रहती है कि बच्चे अच्छे कलाकार बनें या ना बनें पर एक अच्छा इंसान जरुर बनें, जिससे उनका जीवन और उनका आचरण सभी के लिये किसी पेंटिंग की तरह आँखों में बसा रहे।

राजवर्द्धन !
घरौंदा फैसीलीटेटर

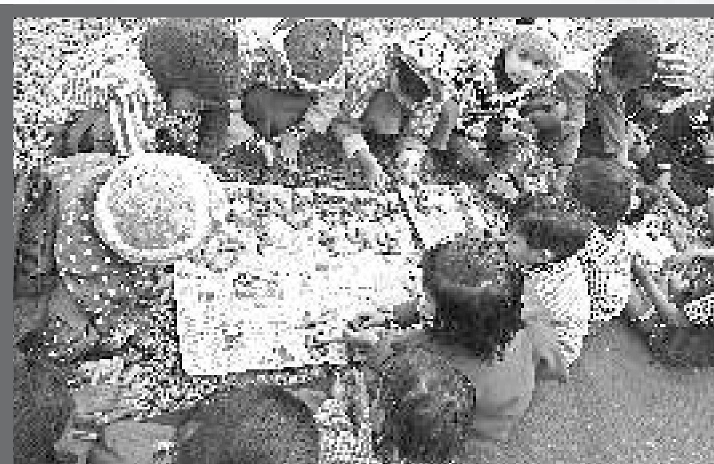

प्रमुख कार्यशाला एवं उसका प्रभाव

बच्चों एवं सेविकाओं के विकास एवं सीखी गयी सभी गतिविधियों के पूर्वाभ्यास के साथ- साथ बच्चों के अभिभावकों के सामने, बच्चों में हुए बदलाव को प्रदर्शित करने के लिए बालघर आँगन द्वारा इस वर्ष जिन जिन कार्यशाला का आयोजन किया गया है उसमें प्रमुख कार्यशालायें इस तरह से हैं:

- खेल-खेल में ज्ञान अवलोकन
- गुन-गुन कार्यशाला
- सेविका प्रशिक्षण
- नन्हे कदम

उपरोक्त सभी कार्यशालाओं का आयोजन जिस उदेश्य को लेकर किया जाता है उसका प्रभाव बच्चों एवं सेविकाओं में हुए बदलाव एवं सेविकाओं एवं अभिभावकों से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर देखा जा सकता है।

प्रतिक्रिया / फीडबैक (अभिभावक) :-

मुस्कान की माँ :- परिवर्तन जाने से पहले मेरी बेटी बहुत गन्दा रहती थी। मैं कितना भी इसे साफ़ रखती फिर भी बाहर जाकर मिट्टी में खेलती और खुद को गन्दा कर लेती थी कभी- कभी मिट्टी खा भी जाती थी। पर जबसे यह परिवर्तन जाने लगी है तबसे यह गन्दा में नहीं खेलती है। अगर कभी इसके कपड़े पर दाल गिर भी जाय तो यह रोने लगती है और मुझे तुरंत साफ़ करना पड़ता है। और यह कहती भी है की परिवर्तन में कहा गया है हमेसा साफ़ कपड़ा पहनने के लिये।

छवि की माँ :- मेरी बेटी के स्वभाव में परिवर्तन जाने से बहुत बदलाव आया है। पहले यह हमको बहुत तंग करती थी। पूरा घर का सामान इधर उधर फेंकती रहती थी। अपनी शैतानी से हम सबको परेशान करती रहती थी पर परिवर्तन जाने से अब यह घर पर भी परिवर्तन की ही कहानी- कविता करती रहती है। शैतानी तो वो अब भी करती है पर पहले की शैतानी और अबकी शैतानी में बहुत अंतर है।

बसंती देवी :- यह अंकुर की दादी है जो बंगरा उज्जैन से आयी थीं। इनके पैर कटे हैं फिर भी ये बैशाखी से चल कर आयी थी। उनका कहना था कि यहाँ "परिवर्तन" में सिखाने के लिये बहुत से साधन हैं और यहाँ का कैम्पस भी कितना साफ़- सुथरा है, ऐसा आंगनबाड़ी को भी होना चाहिए। अंकुर यहाँ से जो भी सीख के जाता है वो घर में भी करता है और हमलोगों को भी कर के दिखाता है।

संध्या देवी :- यह कुणाल सिंह जो नरेन्द्रपुर से आता है, उसकी मम्मी है। इनका कहना था कि कुणाल पहले परिवर्तन आने के नाम से ही रोने लगता और हमको बहुत परेशान करता था लेकिन अब यहाँ आने के लिये रोज सुबह-सुबह खुद तैयार होने लगता है। वो यहाँ से जो भी सीखता है घर पर हमको कर के दिखाता है और जहाँ कुछ भूलता है तो हमको करने को बोलता है।

प्रतिक्रिया / फीडबैक (आंगनबाड़ी सेविका)

·परिवर्तन हमारे समाज के लिये बहुत कुछ कर रहा है। समाज के सबसे अहम् हिस्से की शुरुआत होती है बच्चों से। मै परिवर्तन के बालघर आँगन को बहुत- बहुत बधाई देती हूँ कि वे हमारे आंगनबाड़ी के छोटे- छोटे बच्चों को परिवर्तन ले जाकर उन्हें उचित शिक्षा दे रहा है। सिर्फ बच्चों को ही नहीं परिवर्तन हम सेविकाओं के लिये भी कार्यशाला कराता है।

परिवर्तन के माध्यम से हमें बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है। परिवर्तन द्वारा जो- जो दिया जाता है उससे बच्चों को कुछ समझाना बहुत आसान हो जाता है। परिवर्तन से मैडम केंद्र पर आकर हमलोगों को हमारा उद्देश्य समझाती हैं। जहाँ मैं कुछ भूल जाती हूँ वह खुद करके हमलोगों को समझाती हैं। परिवर्तन जाने वाले बच्चों में बहुत से बदलाव देखने को मिलते हैं।

समर कैंप कार्यशाला द्वारा पटना से आयी मैडम के द्वारा सेविकाओं/ बच्चों के साथ जो भी कार्यशाला द्वारा गतिविधियां हुई उसमें सेविका सब 7 पंचायतों से लगभग 75-85 की उपस्थिति में शामिल रहीं लगातार एक सप्ताह तक वह नियमित रहीं और उन लोगों का कहना भी था कि इस तरह की कार्यशाला निरंतर होती रहना चाहिए क्योंकि रीमा मैडम द्वारा एक्शन कर- कर के बच्चों को समझाने से उस सन्देश को बच्चों तक पहुँचाना बहुत ही आसान लगा।

बच्चों की केस स्टोरी

1. नाम – हिमांशु कुमार
उम्र – 5 वर्ष
ग्राम – बंथू सलोना
सेविका का नाम - मीरा देवी

बंथू सलोना आंगनबाड़ी केंद्र से पांच बच्चे आते हैं पर हिमांशु उसमें सबसे चंचल लड़का है। शुरू में हिमांशु ठीक से बैठता भी नहीं था, क्लास शुरू होने के बाद भी दरवाजा खोल के बाहर निकल जाता था। बाथरूम में जाकर पानी का नल खोल देता था, कभी बिना बताये टायर ग्राउंड में खेलने निकल जाता था। दिनभर अनेक प्रकार की बेढब हरकत करते रहता था। एक दिन मैं हिमांशु के केंद्र की सेविका मीरा देवी को बताई कि आप हिमांशु के जगह किसी और बच्चे को भेजिए तो सेविका बताई कि जिस दिन इस केंद के बच्चों को बालघर जाना होता है उस दिन हिमांशु सुबह से तैयार होकर सेंटर पर आ जाता है। जब सेविका ने हिमांशु से बताई कि तुम परिवर्तन नहीं जाओगे क्योंकि तुम बहुत बदमाशी करते हो, तब हिमांशु रोने लगा और बोलने लगा कि मैडम जी हम कभी बदमाशी नहीं करेंगे पर हम परिवर्तन जायेंगे। उसके बाद हिमांशु ने बदमाशी करना बंद कर दिया और एक अच्छा विद्यार्थी बन गया। वह अब हर कार्य समय से करता है। यहाँ तक कि बाहर जाने से पहले पूछता है- मैडम जी हम बाथरूम जाएँ।

---

2. नाम - आर्यन कुमारी
उम्र – 4 वर्ष
ग्राम- खेम भटकन
सेविका का नाम :-संगीता देवी

चांदनी कुमारी ग्राम बंथू सलोना केंद्र की बच्ची है। वह अन्य बच्चों की तरह परिवर्तन आती है। पहले बालघर में आने के नाम पर रोती थी पर अब अपनी बड़ी बहन काजल के साथ समय पर आ जाती है। बालघर से जुड़ने के बाद कुछ ही दिन में वह सबकी चहेती बन गयी। अब उसको सभी प्रार्थना, सभी गतिविधियां याद हैं, आज वह बच्चों को व्यायाम भी कराती है। उसको सारी गतिविधियाँ भी याद हैं। वह सभी बच्चों को अब एक्शन के साथ गतिविधियाँ कराती है।

3.नाम – मुस्कान कुमारी
उम्र – 4 वर्ष
ग्राम – खेम भटकन
सेविका का नाम:- संगीता देवी

मुस्कान कुमारी ग्राम खेम भटकन की रहने वाली एक समझदार एवं अनुशासित लड़की है। वह बालघर आंगन में नियमित आती है, कभी भी अनुपस्थित नहीं रहती है जिसका उदाहरण समर कैम्प में मिला। समर कैम्प में मुस्कान रोज आती थी कभी भी अनुपस्थित नही हुई। वह रोज सुबह सबसे पहले आती थी और अपनी सभी गतिविधियों को हँसते –हँसते करती थी। उसकी प्रतिभा देखकर रीमा मैडम उसकी तारीफ करते नहीं थकती थीं, अभी भी वह अपने गुण के कारण सारे बच्चों से अलग दिखती है।

4.नाम – परी कुमारी
उम्र – 5 वर्ष
ग्राम – बडहुलिया

सेविका का नाम:- शैलेश देवी

अनन्या कुमारी जब शुरू में परिवर्तन आती थी तब वह बहुत रोती थी, उसको देख कर यह नहीं लगता था कि वह बालघर से जुड़ सकेगी। अनन्या के लिये हमेशा हम लोगों को बिस्कुट एवं चॉकलेट रखना पड़ता था। धीरे-धीरे अनन्या का मन बालघर में लगने लगा और वह रोज बालघर आने लगी। दिन प्रतिदिन उसका बालघर से जुड़ाव बढ़ता गया और वह सभी गतिविधियाँ अच्छी तरह से करने लगी। हमलोगों ने देखा कि अनन्या की आवाज बहुत सुंदर है, तब उसे प्रार्थना में सबसे आगे रखने लगे। अब वह प्रार्थना, बालगीत, बहुत सुन्दर आवाज में गाती है तथा कविता कहानी भी बहुत सुंदर तरह से कराती है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह हमेशा साफ-सुथरा कपड़ा पहनती है और अच्छे से तैयार होकर बालघर आती है। वह खुद तो चंचल है ही दूसरों को भी चंचल रखती है और सभी बच्चो को हँसाती रहती है।

---

5. नाम – कुनाल कुमार
उम्र – 3 वर्ष
ग्राम – नरेन्द्रपुर
सेविका का नाम:- उमरावती सिंह

कुनाल कुमार परिवर्तन बलाघर में आंगनबाड़ी बच्चों के साथ नहीं आता है, शुरू- शुरू में वह अपनी दादी के साथ आता था तब वह बहुत रोता था। कुनाल कुमार अपनी दादी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता था, उसकी दादी उसे बालघर में छोड़कर किसलय में बैठ जाती थी तो कुनाल का रो-रो कर बुरा हाल हो जाता था। कुछ दिन बाद कुनाल को छोड़ने उसके पापा आने लगे। जब उसके पापा उसे छोड़कर जाने लगते थे तो वह होंठ कंपकंपाकर पापा.. बाय पापा ... कहकर रोने लगता था। लेकिन करीब एक महीने के अन्दर कुनाल कुमार में बहुत सुधार हो गया। अब उसे किसी की भी जरूरत नहीं है वह सभी गतिविधियों को बहुत अच्छे से करता है। घर जाकर कविता कहानी अपने मम्मी पापा को सुनाता है जब भूल जाता है तब अपने मम्मी से पूछता है। कुनाल कुमार की मम्मी हमसे बोलती थी कि कविता कहानी एक पेज में लिखकर दे दीजिये, धीरे-धीरे कुनाल को सभी कविता कहानी याद हो गया आज कुनाल कुमार सभी कविता, कहानी अच्छा से करता है तथा दूसरे बच्चों को बताता भी है।